चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Savera times	**22.04.2024**	--	--

International workshop rolls out on recent advances in Agriculture

@Thesaveratimes
Network

Hisar: The fourth international workshop was organized in collaboration with Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, the main theme of which was Recent Advances in Agriculture for Self-reliant India (RAAAB-2024). This workshop was organized by RVSKVV Gwalior in virtual mode. The chief guest in the workshop was Dr. Sanjay Kumar, Chairman of Agricultural Scientists Recruitment Board (ASRB), New Delhi, Vice Chancellor of the University, Prof. as Chief Patron. B.R. Kamboj while UAS Tharwad University Vice Chancellor Dr. P.L. was present as the special guest. Patil and Vice Chancellor of IGKV, Raipur University, Dr. Girish Chandel etc. were present. The organizing secretary of the workshop was Dr. Ankur Sharma. Chief guest Dr. Sanjay Kumar said that the announcement of making India self-reliant was made in 2020, the main objective of which is to popularize and promote local products and to encourage manufacturing in India including the agricultural sector. Under this mission, agriculture can also play an important role in fulfilling the resolution of 'Make in India'.

Now Indian agriculture is focusing not only on productivity and profitability but also on sustainability. Agroecology, organic farming, natural farming and conservation agriculture are growing in popularity today as farmers increasingly recognize the importance of soil health, biodiversity and conservation of natural ecosystems. By adopting these policies, farmers can improve soil fertility, reduce soil erosion and reduce the use of chemicals, thereby tackling the problems caused by climate change. He said that by adopting new and modern technologies, farmers are increasing the

Important role of agriculture sector in making India self-reliant: Prof. B.R. Kamboj

production of their crops and are also contributing in making the country self-reliant. Chief Patterner of the workshop and Vice Chancellor of HKRVI, Prof. B.R. Kamboj in his address said that agriculture sector will play an important role in making India self-reliant in the coming times. Agriculture has always been the backbone of our economy; it provides livelihood to millions of people and ensures food security for our huge population. Does it. In recent years, there have been significant advances in agricultural practices and technologies to increase productivity, sustainability and resilience in the region which will help grow the sector and strengthen our resolve towards self-reliance. He said that to achieve the vision and objective of self-reliant India, the country will have to reduce dependence on import of products and promote local products as much as possible and will also have to think about increasing export of products. There is a need to attract youth and stakeholders in the agriculture sector as agri-education can be one of the best roadmaps for self-reliant India as it creates the base for agri-based start-ups. He said that there is a need to use modern technologies like GPS, sensors, drones and data analytics to increase crop production and increase participation of youth in agriculture sector. He said that Haryana Agricultural University is also playing a leading role in making India self-reliant through activities like research work, latest technologies, educational activities and extension work for the benefit of farmers.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	22-4-24	05	3-7

दैनिक भास्कर

विश्व पृथ्वी दिवस पर विशेष • ग्लोबल वार्मिंग रोकने को बढ़ाना होगा वन क्षेत्र, कृषि वानिकी को बढ़ावा देना जरूरी

हरियाणा में हर साल 7.57 करोड़ टन कार्बन डाईऑक्साइड निकल रही, पर वनों की कार्बन सोखने की क्षमता महज 3.73 करोड़ टन ही

यशपाल सिंह | हिसार

ग्लोबल कार्बन बजट रिपोर्ट 2022 के अनुसार हरियाणा में हर साल करीब 7.57 करोड़ टन कार्बन डाईऑक्साइड निकल रही है। यह पूरे भारत का 2.56 प्रतिशत है। फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया (एफएसआई) की रिपोर्ट के मुताबिक हरियाणा का वन क्षेत्र इतनी कार्बन डाईऑक्साइड को सोखने में कारगर नहीं है। वनों का कुल कार्बन स्टॉक 10.23 मिलियन टन है जो 3.73 करोड़ टन कार्बन को ही सोख सकता है। वन कवर 1603 स्क्वेयर किलोमीटर है, जबकि वन से बाहर ट्री कवर 1425 स्क्वेयर किलोमीटर एरिया है। प्रदेश का कुल वन कवर 3.6 प्रतिशत ही है, जबकि यह 33 प्रतिशत तक होना चाहिए। इसका कृषि समेत अन्य क्षेत्रों पर दुष्प्रभाव दिखने लगा है। ग्लोबल कार्बन बजट की रिपोर्ट के अनुसार हरियाणा में पिछले दशक में जनसंख्या में 19.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जबकि राष्ट्रीय औसत 17.7 प्रतिशत है। यह भी कार्बन निकलने का बड़ा कारण है। प्रदेश में पराली व फसली अवशेष जलाना, उद्योगों, वाहनों की संख्या का बढ़ाना आदि प्रदूषण व कार्बन उत्सर्जन का प्रमुख कारण है। बढ़ती डाईऑक्साइड के कारण गेहूं, चावल, सोयाबीन जैसे अधिकांश खाद्यान्नों में प्रोटीन एवं अन्य आवश्यक तत्वों की कमी देखी गई है।

देश में बारिश के पानी का होता है महज आठ प्रतिशत ही उपयोग

बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, वनों की कटाई, जल के अभाव और प्रदूषण जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इससे मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखापन, बाढ़ आदि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है।
– प्रो. बीआर काम्बोज, कुलपति, एचएयू, हिसार।

भारत देश में बारिश का केवल 8 प्रतिशत जल का उपयोग होता है बाकी 92 प्रतिशत पानी बर्बाद हो जाता है। जल संसाधनों का बेहतर प्रयोग, वाटरशेड विकास, वर्षा जल संचय तथा उन्नत तकनीकों को अपनाकर पानी का उचित प्रबन्ध करने की अति आवश्यकता है। छोटे-छोटे तालाब, जोहड़ व जल भंडारों की संख्या बढ़ानी होगी
–डॉ. दर्शना, सहायक वैज्ञानिक, एसडब्ल्यूई, एचएयू।

वृक्ष ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव को कम करने में अहम भूमिका निभाते हैं। वृक्षों को कार्बन सिंक का भंडार माना जाता है जो वायुमंडल से कार्बन को अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं। वृक्ष हर साल वैश्विक उत्सर्जन का 30 प्रतिशत अवशोषित करते हैं। एक वृक्ष साल में लगभग 22 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करता है। वृक्ष बारिश करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ किसी भी इलाके का तापमान 1 से 5 डिग्री तक कम कर सकते हैं।
– डॉ. संदीप आर्य, प्रोफेसर एंड हेड, वानिकी विभाग, एचएयू।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	22-4-24	04	1-4

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका : प्रो. बीआर काम्बोज

रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत विषय पर हुई अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला

कैंपस कॉलिंग

माई सिटी रिपोर्टर

कार्यशाला में उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य अधिकारी। स्रोत : संस्थान

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सहयोग से रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) विषय पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर की तरफ से ऑनलाइन आयोजित की गई। कार्यशाला के चीफ पैटर्न व कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका रहेगी।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी) नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार और विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएल पाटिल व आईजीकेवी रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे। इस अवसर पर डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। इस मिशन के तहत 'मेक इन इंडिया' के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

उन्होंने कहा कि अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आज के समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं।

इन नीतियों को अपनाकर किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा मिट्टी के कटाव व रसायनों के प्रयोग को भी कम किया जा सकता है, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है। प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

कार्यशाला में आरएलबीसीएयू झांसी के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके चतुर्वेदी, एसकेएलटीएसएचयू तेलंगाना की कुलपति डॉ. नीरजा प्रभाकर, आईसीएआर-डीसीआर, पुटूर के निदेशक डॉ. जेडी अडिगा, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कुलपति प्रो. ऐके शुक्ला ने भी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	22-4-24	09	2-7

रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत विषय पर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका

- कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर की ओर से आभासी मोड में आयोजित की गई

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएबी-2024) था। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर की ओर से आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएल पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे। मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है।

हिसार। रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज व अन्य अधिकारीगण। फोटो: हरिभूमि

इस मिशन के तहत ह्यमेक इन इंडियाह्व के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आज के समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं।

इन नीतियों को अपनाकर, किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं, मिट्टी के कटाव को कम कर सकते हैं और रसायनों के प्रयोग को कम कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है। उन्होंने बताया कि नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी फसलों के उत्पादन को बढ़ा रहा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की होगी अहम भूमिका

कार्यशाला के चीफ पेटर्न व हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका रहेगी. कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। उन्होंने बताया कि आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश को उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी और स्थानीय उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना होगा और उत्पादों को निर्यात को बढ़ाने के बारे में भी सोचना होगा। कृषि क्षेत्र में युवाओं और हितधारकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि कृषि-शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे अच्छे रोडमैप में से एक हो सकती है क्योंकि यह कृषि-आधारित स्टार्टअप के लिए आधार तैयार करती है। उन्होंने बताया कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए और युवाओं की कृषि क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने के लिए जीपीएस, सेंसर, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	22-4-24	05	1-5

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम् भूमिका : प्रो. काम्बोज

रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में उपस्थित कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य अधिकारी।

हिसार, 21 अप्रैल (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) था। यह कार्यशाला आरबीएसकेवीवी ग्वालियर द्वारा आभासी मोड में आयोजित की गई।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साईंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे। मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। इस मिशन के तहत 'मेक इन इंडिया' के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आज के समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं। इन नीतियों को अपनाकर, किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं, मिट्टी के कटाव को कम कर सकते हैं और रसायनों के प्रयोग को कम कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है।

कार्यशाला के चीफ पेटर्न व हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अह्म भूमिका रहेगी, कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय भी किसानों के हित के लिए शोध कार्यों, नवीनतम तकनीकों, शैक्षणिक गतिविधियों व विस्तार कार्यों जैसे गतिविधियों से भारत को आत्मनिर्भ बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है इस दौरान एग्रीमीट फाउंडेशन, यूप की अध्यक्ष डॉ. हर्षदीप कौर द्वार कार्यशाला में भाग लेने वाले अतिथियों का परिचय करवाया गया कार्यशाला में आरएलबीसीएयू झांसी उत्तरप्रदेश के अनुसंधान निदेशक डॉ एसके चतुर्वेदी, एसकेएलटीएसएचयू तेलंगाना की कुलपति डॉ. नीरज प्रभाकर, आईसीएआर-डीसीआर पुटुर के निदेशक डॉ. जेडी अडिगा राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कुलपति प्रो. ऐके शुक्ला ने भी अपने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए आईसीएआर-एनआईबीएसएम रायपुर के संयुक्त निदेशक डॉ. अनिल दीक्षित ने सभी का स्वागत किया जबकि कार्यशाला के अंत में आईसीएआर-एनआईबीएसएम, रायपुर छत्तीसगढ़ के वैज्ञानिक डॉ. एन अश्विनी ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	22-4-24	04	2-4

देश को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि की अहम भूमिका : काम्बोज

हिसार, 21 अप्रैल (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) रहा। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर की ओर से आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पैटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विवि के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे। मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	22-4-24	04	3-6

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि की अहम भूमिका : प्रो. काम्बोज

जागरण संवाददाता, हिसार: हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फार आत्मनिर्भर भारत था। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर द्वारा आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी) नई दिल्ली के चेयरमैन डा. संजय कुमार, चीफ पैटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डा. पीएल पाटिल व आइजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहा भूमिका रहेगी, कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	22-4-24	03	6-7

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका : प्रो. काम्बोज

हिसार, 21 अप्रैल (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय रिसैंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आर.ए.ए.ए.बी.-2024) था।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमैंट बोर्ड, नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यू.ए.एस. धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आई.जी.के.वी., रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	21.04.2024	--	--

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) था। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर द्वारा आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे।

मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। इस मिशन के तहत 'मेक इन इंडिया' के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आज के समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं। इन नीतियों को अपनाकर, किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं, मिट्टी के कटाव को कम कर सकते हैं और रसायनों के प्रयोग को कम कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है। उन्होंने बताया कि नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी फसलों के उत्पादन को बढ़ा रहा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है।

कार्यशाला के चीफ पेटर्न व हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका रहेगी, कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। उन्होंने बताया कि आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश को उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी और स्थानीय उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना होगा और उत्पादों को निर्यात को बढ़ाने के बारे में भी सोचना होगा। कृषि क्षेत्र में युवाओं और हितधारकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि कृषि-शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे अच्छे रोडमैप में से एक हो सकती है क्योंकि यह कृषि-आधारित स्टार्टअप के लिए आधार तैयार करती है। उन्होंने बताया कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए और युवाओं की कृषि क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने के लिए जीपीएस, सेंसर, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय भी किसानों के हित के लिए शोध कार्यों, नवीनतम तकनीकों, शैक्षणिक गतिविधियों व विस्तार कार्यों जैसी गतिविधियों से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	22.04.2024	--	--

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका : प्रो. बीआर कंबोज

सवेरा ब्यूरो

चंडीगढ़, 21 अप्रैल : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय रिसैंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएएबी-2024) था। कार्यशाला में मुख्यातिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमैंट बोर्ड (एएसआरबी) नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कंबोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएल पाटिल व आईजीकेवी रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल उपस्थित रहे। मुख्यातिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है। कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। मिशन के तहत मेक इन इंडिया के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी फसलों के उत्पादन को बढ़ा रहा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की रहेगी अहम भूमिका

प्रो. बीआर कंबोज ने कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका रहेगी। कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है। यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है। हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश को उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी। उत्पादों को निर्यात को बढ़ाने के बारे में भी सोचना होगा। कृषि क्षेत्र में युवाओं और हितधारकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि कृषि-शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे अच्छे रोडमैप में से एक हो सकती है। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए और युवाओं की कृषि क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने के लिए जीपीएस, सैंसर, ड्रोन और डाटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय भी किसानों के हित के लिए शोध कार्यों, नवीनतम तकनीकों, शैक्षणिक गतिविधियों व विस्तार कार्यों जैसी गतिविधियों से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	21.04.2024	--	--

भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अह्म भूमिका : प्रो. बी.आर. काम्बोज रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से चौथी अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका मुख्य विषय रिसेंट एडवांसेज इन एग्रीकल्चर फॉर आत्मनिर्भर भारत (आरएएबी-2024) था। यह कार्यशाला आरवीएसकेवीवी ग्वालियर द्वारा आभासी मोड में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एग्रीकल्चरल साइंटिस्ट्स रिक्रूटमेंट बोर्ड (एएसआरबी), नई दिल्ली के चेयरमैन डॉ. संजय कुमार, चीफ पेटर्न के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में यूएएस धारवाड विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एल. पाटिल व आईजीकेवी, रायपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरिश चंदेल इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजक सचिव डॉ. अंकुर शर्मा रहे। मुख्य अतिथि डॉ. संजय कुमार ने कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने की घोषणा 2020 में की गई थी जिसका मुख्य उद्देश्य स्थानीय उत्पादों को प्रचलित व बढ़ावा देना है और कृषि क्षेत्र सहित भारत में विनिर्माण को प्रोत्साहित करना है। इस मिशन के तहत ह्यमेक इन इंडियाह्व के संकल्प को पूरा करने में कृषि भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अब भारतीय कृषि न केवल उत्पादकता और लाभप्रदता पर बल्कि स्थिरता पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। आज के समय में कृषि पारिस्थितिकी, जैविक खेती, प्राकृतिक खेती और संरक्षण कृषि का चलन बढ़ रहा है क्योंकि किसान तेजी से मिट्टी के स्वास्थ्य, जैव विविधता और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के महत्व को पहचान रहे हैं। इन नीतियों को अपनाकर, किसान मिट्टी की उर्वरता में सुधार कर सकते हैं, मिट्टी के कटाव को कम कर सकते हैं और रसायनों के

प्रयोग को कम कर सकते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन से होने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है। उन्होंने बताया कि नई और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान अपनी फसलों के उत्पादन को बढ़ा रहा है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना योगदान दे रहा है। कार्यशाला के चीफ पेटर्न व हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले समय में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में कृषि क्षेत्र की अह्म भूमिका रहेगी, कृषि हमेशा से हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ रही है, यह लाखों लोगों को आजीविका प्रदान करती है और हमारी विशाल आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है। हाल ही के वर्षों में, इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है जो इस क्षेत्र को बढ़ाने और आत्मनिर्भरता की दिशा में हमारी संकल्प को मजबूत करने में मदद करेगी। उन्होंने बताया कि आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण और उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए देश को उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करनी होगी और स्थानीय उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देना होगा और उत्पादों को निर्यात को बढ़ाने के बारे में भी सोचना होगा। कृषि क्षेत्र में युवाओं और हितधारकों को आकर्षित करने की आवश्यकता है क्योंकि कृषि-शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के लिए सबसे अच्छे रोडमैप में से एक हो सकती है क्योंकि यह कृषि-आधारित स्टार्टअप के लिए आधार तैयार करती है। उन्होंने बताया कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए और युवाओं को कृषि क्षेत्र में भागीदारी बढ़ाने के लिए जीपीएस, सेंसर, ड्रोन और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय भी किसानों के हित के लिए शोध कार्यों, नवीनतम तकनीकों, शैक्षणिक गतिविधियों व विस्तार कार्यों जैसी गतिविधियों से भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस दौरान एग्रीमीट फांउडेशन, यूपी की अध्यक्ष डॉ. हर्षदीप कौर द्वारा कार्यशाला में भाग लेने वाले अतिथियों का परिचय करवाया गया। कार्यशाला में आरएलबीसीएयू झांसी उत्तरप्रदेश के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके चतुर्वेदी, एसकेएलटीएसएचयू, तेलंगाना की कुलपति डॉ. नीरजा प्रभाकर, आईसीएआर-डीसीआर, पुदुर के निदेशक डॉ. जेडी अडिगा, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर के कुलपति प्रो. ऐके शुक्ला ने भी अपने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। आईसीएआर-एनआईबीएसएम रायपुर के संयुक्त निदेशक डॉ. अनिल दीक्षित ने सभी का स्वागत किया जबकि कार्यशाला के अंत में आईसीएआर-एनआईबीएसएम, रायपुर छत्तीसगढ़ के वैज्ञानिक डॉ. एन अश्विनी ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया।